राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • सोमवार • 21 मार्च • 2022

खीरे की फसल को कीड़ों से बचा लाभ उठायें किसान

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिक विवि के कीट विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. वाईपी मलिक ने खीरे की फसल में कीड़े के प्रवंधन को लेकर किसानों के लिए सलाह जारी की है। उनका कहना है कि खीरा उत्पादक यदि अच्छी पैदावार चाहते हैं तो कीट प्रवंधन महत्वपूर्ण है। खीरे की फसल में हानिकारक कीटों को नियंत्रित न करने से वहुत नुकसान हो सकता है।

डॉ. वाईपी मलिक व खीरे की फसल। फोटो : एसएनबी

उन्होंने कहा कि खीरे की फसल में प्रमुख कीट कद्दू का लाल कीट, सफेद मक्खी एवं लाल मकड़ी आदि प्रमुख रूप से आर्थिक क्षति पहुंचाते हैं। लाल कीट मार्च महीने में अधिक सक्रिय रहता है और फसल पर आक्रमण करके मुलायम पत्तियों को नष्ट कर देता है। इसकी रोकथाम के लिए डाईक्लोरोवास 76 ईसी 1.25 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के हिसाव से फसल पर छिड़काव किया जाना चाहिए।

> सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिक विवि के कीट विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. वाईपी मलिक ने किसानों को दी जानकारी
>
> कहा, हानिकारक कीटों को नियंत्रित न करने से हो सकता है काफी नुकसान

सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 0.3 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। लाल मकड़ी की रोकथाम के लिए डाईजोपाल 18.5 ईसी 5 मिलीलीटर दवा को पानी की 1 लीटर मात्रा में घोलकर उपयोग करना चाहिए।

डॉ.मलिक ने वताया कि यदि किसान खीरे की फसल में कीटों का प्रवंधन ठीक से कर लेते हैं, तो गुणवत्तापरक खीरा उत्पादित होगा तथा वाजार मूल्य अधिक मिलेगा। किसानों की आय में वृद्धि होगी।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpre

WORLD खबर EXPRESS

रविवार, 20-03-2022 अंक-77

www.worldkhabarexpress.media

www.worldkhabarexpress.com

WORLD

खबर एक्सप्रेस

MID DAY E-PAPER

खीरे की फसल को कीड़ों से बचाएं: डॉ. मलिक

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में आज कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वाईपी मलिक ने खीरे की फसल में कीड़ों का प्रबंधन विषय पर एडवाइजरी जारी की है । उन्होंने बताया कि खीरा फसल में हानिकारक कीटों का नियंत्रण आवश्यक है। डॉ. मलिक ने कहा कि खीरा फसल में प्रमुख कीट कद्दू का लाल कीट, सफेद मक्खी व लाल मकड़ी आदि प्रमुख रूप से आर्थिक क्षति पहुंचाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि यदि खीरा उत्पादक यदि अच्छी पैदावार चाहते हैं तो इन सबका प्रबंधन करना होगा। उन्होंने बताया कि लाल कीट मार्च में अधिक सक्रिय रहता है और फसल पर आक्रमण कर मुलायम पतियों को नष्ट कर देता है। इसकी रोकथाम के लिए डाईक्लोरोवास 76 ईसी 1.25 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से फसल पर छिड़काव करें। सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 0.3 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। डॉ. मलिक ने बताया कि लाल मकड़ी की रोकथाम के लिए डाई गोपाल 18.5 ईसी 5 मिलीलीटर दवा को पानी की एक लीटर पानी के साथ घोलकर किसान छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि यदि किसान खीरे की फसल में कीटों का प्रबंधन कर लेते हैं तो गुणवत्ता परक खीरा उत्पादित होगा और बाजार मूल्य अधिक मिलेगा जिससे किसानों को की आय में वृद्धि होगी।

निकरा परियोजना की कार्यशाला कल

कानपुर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अटारी, जोन-3 के निदेशक डॉ. यूएस गौतम ने बताया कि निकरा परियोजना के अंतर्गत सोमवार को जलवायु परिवर्तन पर एक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है जिसमे भाअनुप-केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक डॉ. विनोद कुमार सिंह तथा अन्य संस्थानों के वैज्ञानिक व निकरा परियोजना से जुड़े कृषि विज्ञान केंद्रों के अध्यक्ष उपस्थित रहेंगे। कार्यशाला में निकरा परियोजना के नए 5 कृषि विज्ञान केंद्रों बस्ती, कानपुर देहात, जालौन, बांदा व भदोही में निकरा परियोजना का शुभारंभ किया जाएगा और निकरा परियोजना के अंतर्गत पहले से कार्य कर रहे 12 पुराने कृषि विज्ञान केंद्रों बागपत, चित्रकूट, प्रतापगढ़, कौशाम्बी, गोण्डा-I, झांसी, हमीरपुर, सोनभद्र, महाराजगंज, गोरखपुर-I, बहराइच-I व कुशीनगर की ओर से गतवर्ष की उपलब्धियों का प्रस्तुतिकरण किया जाएगा। साथ ही निकरा कृषि विज्ञान केंद्रों की वर्ष 2022-23 के लिए कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण भी किया जाएगा। कार्यशाला में जलवायु परिवर्तन पर चर्चा व कृषि पर होने वाले प्रभाव से बचने के लिए संस्थानों की खोजी गई विभिन्न तकनीकियों का समावेश कराने के लिए भाकृअनुप संस्थानों के निदेशकगण व उनके प्रधान वैज्ञानिक भाग लेंगे। साथ ही कृषि विश्वविद्यालयों की तकनीकियों पर भी विचार किया जाएगा। कार्यशाला में भाग लेने वाले किसानो के अनुभव साझा दिए जाएंगे।

अमर उजाला 21/03/2022

खीरे की फसल को कीड़ों से बचाएं

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. वाईपी मलिक ने खीरे की फसल को कीड़ों से बचाने की रविवार को एडवाइजरी जारी की। बताया कि खीरा फसल में कद्दू का लाल कीट, सफेद मक्खी और लाल मकड़ी क्षति पहुंचाते हैं। लाल कीट मार्च में अधिक सक्रिय रहता है। यह मुलायम पत्तियों को नष्ट कर देता है। इसकी रोकथाम के लिए डाईक्लोरोवास 76 ईसी 1.25 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 0.3 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। लाल मकड़ी की रोकथाम के लिए डाई गोपाल 18.5 ईसी 5 मिली दवा को एक लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। (संवाद)

Sign in to edit and save changes to this file.

लखनऊ संस्करण
वर्ष-06, अंक -145
सोमवार, 21 मार्च 2022
पृष्ठ-12
मूल्य-3 रुपये

Azadi Ka Amrit Mahotsav

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

दैनिक भास्कर

For epaper : www.dainikbhaskarup.com

खीरे की फसल को कीड़ों से बचाएं: डॉ. मलिक

कानपुर। सीएसए के कुलपति डा डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ वाई पी मलिक ने खीरे की फसल में कीड़ों का प्रबंधन विषय पर एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि खीरा फसल में हानिकारक कीटों का नियंत्रण आवश्यक है डॉक्टर मलिक ने कहा कि खीरा फसल में प्रमुख कीट कद्दू का लाल कीट, सफेद मक्खी एवं लाल मकड़ी आदि प्रमुख रूप से आर्थिक क्षति पहुंचाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि यदि खीरा उत्पादक यदि अच्छी पैदावार चाहते हैं तो इन सबका प्रबंधन करना होगा। उन्होंने बताया कि लाल कीट मार्च महीने में अधिक सक्रिय रहता है और फसल पर आक्रमण करके मुलायम पतियों को नष्ट कर देता है। इसकी रोकथाम के लिए डाईक्लोरोवास 76 ई सी 1.25 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से फसल पर छिड़काव करें। सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 0.3 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। डॉक्टर मलिक ने बताया कि लाल मकड़ी की रोकथाम के लिए डाई गोपाल 18.5 ईसी 5 मिलीलीटर दवा को पानी की 1 लीटर पानी के साथ घोलकर किसान भाई छिड़काव करें।

Sign in to edit and save changes to this file.

@janexpressnews janexpressive janexpressive www.janexpressive.com/epaper

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्ष : 13 | अंक : 156
मूल्य : ₹3.00/-
पेज : 12

लखनऊ | सोमवार | 21 मार्च, 2022

लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

खीरा फसल में हानिकारक कीटों का नियंत्रण आवश्यक

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। खीरा फसल में हानिकारक कीटों का नियंत्रण आवश्यक है खीरे में लगने वाले प्रमुख कीट कद्दू का लाल कीट, सफेद मक्खी एवं लाल मकड़ी आदि प्रमुख रूप से इसकी फसल को क्षति पहुंचाते हैं। यह बात रविवार को सीएसएयू के कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह के निर्देश क्रम में कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वाई. पी. मलिक ने खीरे की फसल में कीड़ों का प्रबंधन विषय पर एडवाइजरी जारी करते हुए कही। उन्होंने कहा कि इन सब का प्रबंधन कर खीरा उत्पादक अच्छी फसल प्राप्त कर सकते है। उन्होंने बताया कि लाल कीट मार्च महीने में अधिक सक्रिय रहता है और फसल पर आक्रमण करके मुलायम पतियों को नष्ट कर देता है। इसकी रोकथाम के लिए डाईक्लोरोवास 76 ई सी 1.25 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से फसल पर छिड़काव करना चाहिए तथा सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 0.3 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए। उन्होंने बताया कि लाल मकड़ी की रोकथाम के लिए डाई गोपाल 18.5 ईसी 5 मिलीलीटर दवा को पानी की 1 लीटर पानी के साथ घोलकर छिड़काव करें। उन्होंने कहा कि किसान फसल में कीटों का उचित प्रबंधन कर गुणवत्ता परक खीरा उत्पादित कर सकते हैं।

Sign in to edit and save changes to this file.

खीरे की फसल को कीड़ों से बचाएं, दवा का छिड़काव जरूरी

❑ कृषि वैज्ञानिक डा. वाई.पी. मलिक ने जारी की एडवाइजरी

डॉ वाई पी मलिक

कानपुर, 20 मार्च। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डा डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में आज कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ वाई पी मलिक ने खीरे की फसल में कीड़ों का प्रबंधन विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि खीरा फसल में हानिकारक कीटों का नियंत्रण आवश्यक है डॉक्टर मलिक ने कहा कि खीरा फसल में प्रमुख कीट कद्दू का लाल कीट, सफेद मक्खी एवं लाल मकड़ी आदि प्रमुख रूप से आर्थिक क्षति पहुंचाते हैं। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि यदि खीरा उत्पादक यदि अच्छी पैदावार चाहते हैं तो इन सबका प्रबंधन करना होगा। उन्होंने बताया कि लाल कीट मार्च महीने में अधिक सक्रिय रहता है और फसल पर आक्रमण करके मुलायम पतियों को नष्ट कर देता है। इसकी रोकथाम के लिए डाईक्लोरोवास 76 ई सी 1.25 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से फसल पर छिड़काव करें। सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 0.3 मिलीलीटर दवा प्रति

लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें। डॉ. मलिक ने बताया कि लाल मकड़ी की रोकथाम के लिए डाई गोपाल 18.5 ईसी 5 मिलीलीटर दवा को पानी की 1 लीटर पानी के साथ घोलकर किसान भाई छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि यदि किसान भाई खीरे की फसल में कीटों का प्रबंधन कर लेते हैं तो गुणवत्ता परक खीरा उत्पादित होगा तथा बाजार मूल्य अधिक मिलेगा जिससे किसानों को की आय में वृद्धि होगी।

वर्ष 16 अंक 77 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, सोमवार 21 मार्च 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक

नगर छाया

आप की आवाज़.....

फसल अवशेष योजना अंतर्गत प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम संपन्न

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत ग्राम सहतावनपुरवा में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता ग्राम के प्रगतिशील किसान छुन्ना सिंह ने की। इस कार्यक्रम में ग्राम के 60 से अधिक किसानों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अशोक कुमार ने किसानों को फसल अवशेष न जलाने के लिए जागरूक किया। साथ ही कहा की फसलों के अवशेष को मृदा में ही सड़ा देने से पोषक तत्वों की मात्रा पौधों को मिलती है। फसल अवशेष प्रबंधन के नोडल अधिकारी डॉ. खलील खान ने कृषकों को बताया कि रोटावेटर और सुपर सीडर मल्चर से फसल अवशेष को खेत मे दबा देने से गेहूं की फसल अच्छी होती है। इस अवसर पर खेत में किसानों को गेहूं की फसल भी दिखाई गई। सभी किसान फसल को देखकर सहमत हुए कि अब हम फसल अवशेषों में आग नहीं लगाएंगे। इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत ने किसानों को संबोधित किया। अंत में ग्राम के सम्मानित किसान छुन्ना सिंह यादव ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।